डॉ॰ अनिरुद्ध सिंह
मारवाड़ी महाविद्यालय

नागार्जुन

(तरौनी गांव)

जन्म - 30 जून 1911 ~~[illegible]~~ उपनाम - यात्री

मृत्यु - 5 नवम्बर 1998 मूलनाम - वैद्यनाथ मिश्र

नागार्जुन मैथिली और हिन्दी के लेखक और कवि थे। वे अनेक भाषाओं के ज्ञाता तथा प्रगतिशील विचारधारा के साहित्यकार थे इसके अतिरिक्त संस्कृत एवं बांग्ला में मौलिक रचनायें भी की।

नागार्जुन की प्रकाशित कृतियाँ-

कविता संग्रह-

1- युगधारा
2- सतरंगे पंखों वाली
3- प्यासी पथराई आँखें
4- तालाब की मछलियाँ
5- तुमने कहा था
6- खिचड़ी विप्लव देखा हमने
7- हजार-हजार बाहों वाली
8- पुरानी जूतियों का कोरस
9- रत्नगर्भ
10 - ऐसे ही हम क्या!
11 - इस गुब्बारे की छाया में
12 - आखिर ऐसा क्या कह दिया मैंने
13 - भूल जाओ पुराने सपने
14 - अपने खेत में

मैथिली रचनाएं

चित्रा - 1949
पत्रहीन नग्न गाछ - 1967
पारो (उपन्यास)
नवतुरिया

कहानी संग्रह

आसमान में चन्दा तैरे (1982)

प्रबंध काव्य

भस्मांकुर - 1970
भूमिजा

संस्मरण

एक व्यक्ति एक युग - 1963

उपन्यास

रतिनाथ की चाची
बलचनमा
नयी पौध
बाबा बटेसरनाथ
वरुण के बेटे
दुःखमोचन
कुंभीपाक
हीरक जयंती
उग्रतारा
जमनिया का बाबा
गरीबदास

Scanned with CamScanner

नागार्जुन को प्रगतिशील काव्यधारा का आधार कवि माना जाता है। नागार्जुन ने जीवन को उसके विविध रूपों में, जटिल संघर्षों को, राजनीतिक विकृतियों को, मजदूर आंदोलनों को, किसान जीवन के सामान्य दुःख सुख को पहचानने और अभिव्यक्त करने का सृजनात्मक उत्तरदायित्व को अपने कंधों पर उठाया है। जिस प्रकार उनकी काव्य संरचना और कथ्य के स्तर पर वैविध्य है, वैसा ही वैविध्यमय उनका जीवन भी रहा है। नागार्जुन की बात करते ही उनकी कविताएँ 'अकाल और उसके बाद', 'बादल को घिरते देखा है' तथा 'कालिदास सच-सच बतलाना' सयास ही ध्यान में आ जाती है। लेकिन इन तीनों कविताओं की विषयवस्तु अलग-अलग है, इनका शिल्प भी एक दूसरे से भिन्न है और तीनों की संवेदना के भी अलग-अलग रंग है। नागार्जुन के काव्य में संवेदना के इन्हीं भिन्न-भिन्न रूपों के माध्यम से हम काव्य का अध्ययन करते हैं। किसी भी वस्तु, भाव और स्थिति के हृदय पर पड़े प्रभाव की प्रतिक्रिया ही संवेदना कहलाती है। नागार्जुन का काव्य संसार वैविध्यमय होने के साथ-साथ बहुत व्यापक एवं विराट है। इसमें प्रकृति, मनुष्य, पशु, राजनीतिक-सामाजिक जीवन, जीवन के मधुर एवं कोमल पक्ष एवं व्यंग्य की तीखी धार जीवन की सारी गतिविधियाँ सब शामिल है। नागार्जुन को जीवन का जो विस्तार है वह उनकी कविता में मिलता है। उनकी कविता जीवन-संकुल, गहन और भरी-पूरी है। इसलिए उनकी चेतना का स्वरूप भी अत्यंत व्यापक है।

Scanned with CamScanner

नागार्जुन की कविता का एक बहुत बड़ा भाग प्रकृति-निर्मित तथा उनकी कविताओं का एक अपरिहार्य संवेग प्रकृतिजन्य है। प्रकृति के अंसख्य रूपों में नागार्जुन को तीव्रता से संवेदित किया है। उनके पहले कविता-संग्रह 'युगधारा' में एक कविता 'रजनीगंधा' है -

"तुम खिलो रात की रानी
हो म्लान भले यह जीवन और जवानी
तुम खिलो रात की रानी।"

यहाँ रात की रानी की सुगंध ने कवि को व्याकुल कर दिया है। रजनीगंधा की सुगंध इस बंदी जीवन का प्रतिवाद तथा विकल्प सा है।

नागार्जुन की कविता में जानवर भी संवेदना जगाते हैं और नागार्जुन ने बहुत मार्मिकता के उनका अंकन किया है। प्रायः हर जगह जानवर और आदमी का जीवन सम्मिलित रूप से आता है जैसे प्रसिद्ध कविता 'अकाल और उसके बाद' में या 'नेवला' में। लेकिन हम उस कविता को लें जिसके बिना नागार्जुन के काव्य सार को समझना कठिन है। कविता है :- 'पैनी दाँतों वाली'

'धूप में पसरकर लेटी है
~~मोटी~~-तगड़ी, अधेड़ मादा सुअर...
जमना-किनारे
मखमली दूबों पर
पूस की गुनगुनी धूप में
पसरकर लेटी है।'

कवि नागार्जुन को कितनी छोटी-छोटी बातें और चीजें रोक लेती हैं, अपनी तरफ खींचती हैं। और इन छोटी-छोटी बातों से उनकी सम्पूर्ण जीवन-दृष्टि बनती है। नागार्जुन की कविता है 'इन सलाखों से टिका भाल'-

'इन सलाखों से टिकाकर भाल
सोचता ही रहूँगा चिरकाल
और भी तो पकेंगे कुछ बाल
जाने किसकी। जाने किसकी
और भी तो कुछ गलेगी कुछ दाल।'

नागार्जुन काव्य का एक बड़ा अंश राजनीतिक है। नागार्जुन की कविता में संघर्ष, विद्रोह तथा जनता की जय में विश्वास मिलता है। छोटी से छोटी लड़ाई भी नागार्जुन को बेचैन कर देती है-'बस सर्विस बंद रही तीन दिन तीन रात' से लेकर 'भोजपुर' तक। नागार्जुन की एक प्रसिद्ध कविता है 'शासन की बंदूक'-

'खड़ी हो गई चाँपकर कंकालों की हूक
नभ में विपुल विराट-सी शासन की बंदूक
जली ठूँठ पर बैठकर गई कोकिला कूक
बाल न बांका कर सकी शासन की बंदूक।'

वह कोकिला ही जीवन का पक्ष है, संघर्षरत भारतीय जन का प्रतीक है। नागार्जुन अपनी सारी संवेदना उस पर न्यौछावर करते हैं-

"गुंजित कर रखी है हमने।
ये निर्मल-निश्चल प्रशस्तियाँ॥"

Scanned with CamScanner

नागार्जुन के साथ एक विशेष बात यह है कि वह व्यंग्य के भी बेजोड़ कवि हैं। संभवतः कबीर के बाद व्यंग्य का इतना बड़ा कवि दूसरा नहीं है। वास्तव में संवेदना की तीव्रता तथा एक पक्ष में प्रेम की अधिकता एवं दूसरे से घृणा ही हमें व्यंग्य की ओर ले जाती है। नागार्जुन कहते हैं -

'नफरत की अपनी भट्ठी में
तुम्हें गलाने की कोशिश हो
मेरे अंदर बार-बार ताकत भरती है
- - -
प्रतिहिंसा स्थायी भाव है मेरे कवि का
जन-जन में जो उर्जा भर दे, मैं उद्गाता हूँ उस रवि का।'

नागार्जुन पूरी शक्ति से इस व्यवस्था में प्रहार करते हैं।

Scanned with CamScanner